प्रस्न 3. गोविन्द दासक नवधा भक्तिक सरलार्थ लिखू।

उतर --- *नवधा भक्ति अर्थात नौ तरहसँ भक्ति क सकैत छी । कवि भक्ति हेतु जन - जनकें नवधा भक्तिक सरल स्वरूप प्रस्तुत कैलनी । भक्तक बीच नवधा भक्ति सतत् लोकप्रिये बनल रहल ।पद अछि*

" भजहु रे मन नन्द नन्दन अभय - चरणारविन्द ।

दुर्लभ मानुश - जनम सत्संग तरह ए भव - सिन्धु ॥

एक भक्त अपना मन कें स्वंग सम्बोधित करैत कहैत अछि रे मन नन्द कें नन्दन श्रीक्रूशन चरन कमलक सेवामे लागह वैह एहि संसार मे अभय प्रदान कएनिहार छथि । मनुक्खक जीवन पुनि भेटल दुर्लभ थिक तें सत्यकें संग रहि एहि संसार रूपी भव सागरकें पार करबाक यत्न करह ।फेर मानुश तन नहि भेटतह । शीत , ताप , हवा, पाइन त दिन

Scanned by CamScanner

रातिक कें वस्तु ठीकै, सुतल जागल शतत ओकर प्रभवसँ होइते रहैत छ, तखनो क्रिप्नक सेवामे कियैक लागल रहैत छह ।

ए धन यौवन पुत्र परिजन एतकि अछि पर्तिति ।

कमल्दल जल जीवन भजहु हरि - पद नीति ।

धन सम्प्ति ,पुत्र आ कुटुम्बक कोन विस्वास के कखन संग छोरि देत नहि कहल जा सकैछ । ओहिना कमलक फुल आ पात पर परल जलक बून्द डलमल करैत जल मे विला जाइत अछि । ताहिना मनुक्खक कोख जीवन छैक तें हरि पदक पूजन आ स्मरण सतत् करैत रहबाक छै वैह असली काज देतह । तें

Scanned by CamScanner